Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2019

SPECIAL ISSUE- 83

खण्ड - तीन

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श

(किन्नर, वृध्द, किसान तथा नारी)

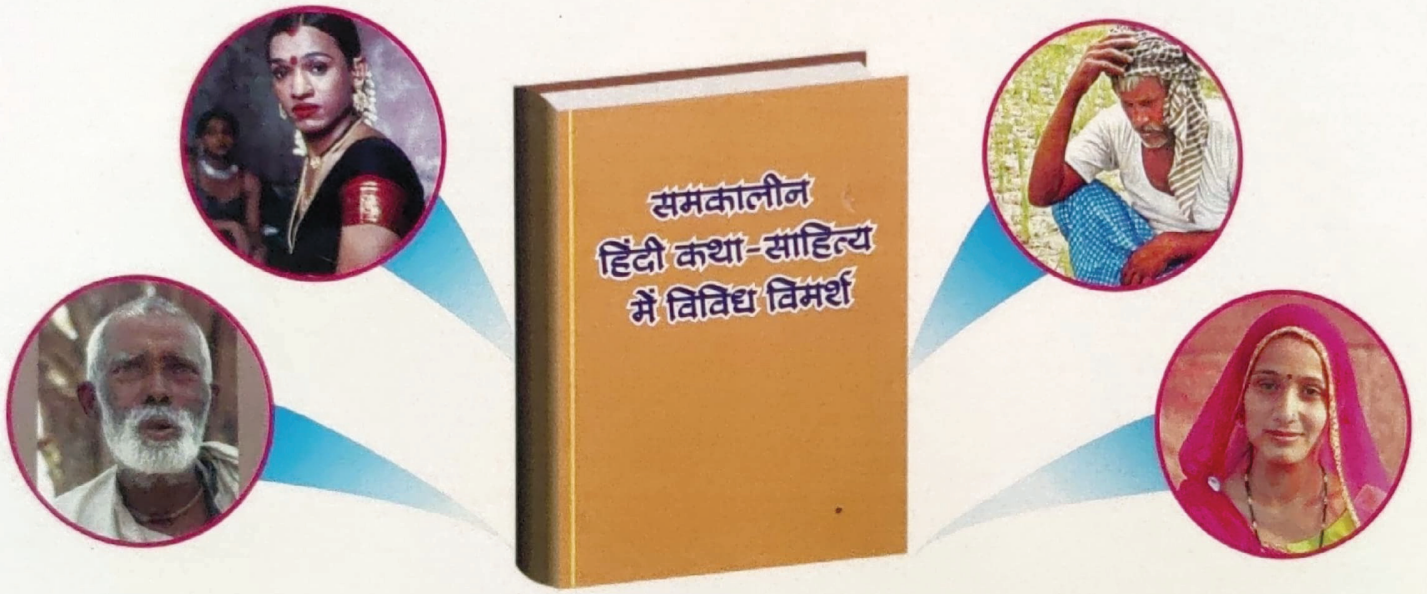

विशेषांक संपादक :

डॉ.सौ. सुरैय्या इसुफअल्ली शेख

असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक

अध्यक्षा, हिंदी विभाग,

मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत.

अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :

- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-2019 Special Issue –83

खण्ड-तीन
(समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श
(किन्नर, वृद्ध, किसान तथा नारी विमर्श)

विशेषांक संपादक :
डॉ.सौ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
मा. ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत
अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 900/-

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 83 (खण्ड- 3) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

अनुक्रमणिका

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	डॉ.मधुकर खराटे	09
2	अनुसूया त्यागी कृत मै भी औरत हुँ में किन्नर विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा	16
3	किन्नरों के जीवन का यथार्थ चित्रण	डॉ.शंकर शिवशेट्टे	22
4	तिसरी तली का सच	चंदना जैन	26
5	गुलाम मंडी उपन्यास में किन्नर विमर्श	डॉ.पिरू. आर.गवली	30
6	किन्नरों की व्यथा- कथा को व्यक्त करता उपन्यास : 'जिंदगी ५० -५०'	डॉ.साहेबहूसैन जे. जहागीरदार	36
7	संघर्षो, पीडाओं और दर्द से भरा किन्नर जीवन 'मै हिजडा ...मै लक्ष्मी ..'के विशेष संदर्भ में	डॉ.एस.एन.तायडे	39
8	हिंदी कहानियों में किन्नरों की समस्या	डॉ.शेख सैबाशिरीन हारून रशीद	44
9	कबीरन कहानी में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ.सदानंद भोसले, राजेंद्र वरपे	47
10	हासिए का समाज- किन्नर	डॉ.अनिल साळुंखे	51
11	नीरजा माधव के यमदीप उपन्यास में किन्नर विमर्श	प्रा. समाधान नागणे, प्रा.देवेंद्र देवकुळे	55
12	एक और तिसरी दुनिया – पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपरा	डॉ. जयश्री शिंदे	59
13	किन्नर कथा में मानवतावादी दृष्टिकोण	डॉ. सविता प्रमोद	63
14	हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ. रविंद्र पाटील	67
15	तृतीय पंथीयों का जीवन संघर्ष: 'जिंदगी ५०-५०'	तेजश्री पाटील	69
16	अधुरी देहधारी : मै पायल.....	शीला घुले	71
17	उपेक्षित वृद्ध जीवन की दास्तान: समय सरगम	डॉ. अपर्णा कुचेकर	74
18	२१ वीं शती के हिंदी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ.अशोक मरळे	77
19	जिंदगी की संध्यबेला से भायाक्रांत दौंड	प्रा.निवृत्ती लोखंडे	81
20	कृष्णा सोबती के 'समय – सरगम' उपन्यास में वृध्द –विमर्श	प्रा.दादासाहेब खांडेकर	84
21	कृष्ण बलदेव वैद के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ. हणमंत पवार	93
22	कृष्णा सोबती की कहानी दादी-अम्मा में वयोवृद्ध स्त्री की विवंचना	डॉ. मदन खरटमोल	98
23	समकालीन हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श	ज्ञानेश्वर मेहेरकर	101
24	वृद्ध जीवन की सही पहचान:रमेशचंन्द्र शाह के उपन्यास	साहेबराव काम्बले	104
25	हिमांशु जोशी के कथा- साहित्य में वृद्धजनों के प्रति संवेदना	श्रीमती अरुणा	106
26	वृद्ध विमर्श 'बूढी काकी', 'चीफ की दावत' तथा 'वापसी' कहानी के विशेष सन्दर्भ में	इबरार खान	111
27	नई दुनिया और बुढापा : एक सामाजिक चिंतन	कु.अनिता राऊत	115
28	हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श	झिल्ली नायक	118
29	किसान विमर्श और फॉस	डॉ.गिरीश काशिद	120
30	समकालीन हिंदी- मराठी उपन्यासों में गाँव	डॉ.मनोहर भांडारे	128
31	फॉस उपन्यास और किसान विमर्श	रेवनसिद्ध चव्हाण, प्रो.सदानंद भोसले	131
32	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित किसान जीवन	रामेश्वर वाढेकर, विकास वाघमारे	134

33	किसान जीवन की कथा : 'बारोमास'	प्रा.पी.आर.रगडे	137
34	किसान विमर्श	डॉ. किरण कामाजी	144
35	डॉ. विवेकी राय के निबन्धो में किसान विमर्श	डॉ.राजेश भामरे	147
36	सुषम बेदी का उपन्यास 'इतर' का मनोवैज्ञानिक अध्ययन अल्पना इस स्त्री पात्र के विशेष संदर्भ में	गणेश खैरे	152
37	'यह कहानी नही' में चित्रित नारी विमर्श	विनोद निरगुडे	155
38	'कठगुलाब' में स्त्री विमर्श	जयंती सिंह	158
39	मैत्रेयी पुष्पा और भारतीय नारी संघर्ष गुनाह बेगुनाह उपन्यास के विशेष संदर्भ में	दीपिका शर्मा	162
40	समकालीन हिंदी कहानी में नारी चेतना महिला कहानीकरों के विशेष संदर्भ में	रुबीना शमीम खान	172
41	विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में चित्रित नारी	श्रीमती सुलताना शिकलकर	175
42	वर्तमान स्त्री संघर्ष और 'दु:ख्खम सुख्खम' उपन्यास ममता कालिया के विशेष संदर्भ में	डॉ. एकता रानी	180
43	२१ वीं सदी को हरी झंडी निलु नीलिमा नीलोफर उपन्यास में साम्परदायिक संघर्ष में तहस-नहस नारी	रवी कुमार	187
44	समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श	लतिका काटे	192
45	अलका सरावगी के कथा साहित्य में स्त्री विवशता का दर्शन	देवकांत गुरव	196
46	नारी जीवन की त्रासदी ' पिछले पन्ने कि औरते'	सीमा देवी	199
47	'चाक' उपन्यास में नारी	डी.शिवाजी	203
48	समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ. जियाउर रहमान जाफरी	206
49	'पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपारा' में चित्रित किन्नर जीवन की समस्याएँ	डॉ. श्रीकृष्ण काकानी	208
50	'तिसरी ताली' उपन्यास में किन्नर विमर्श	प्रा. अंजली जाधव	211
51	मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री विमर्श	प्रा.आर.ए. खराडे	215

*इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये है। प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है । प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, इन मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है । आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपीराईट **(Originality of the papers)** की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है ।*

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 83 (खण्ड- 3) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

किसान विमर्श और फॉस

डॉ. गिरीश काशिद
हिंदी विभाग,
एस.बी.झेड कॉलेज, बार्शी
जिला-सोलापुर ४१३४११

भारत एक कृषि प्रधान देश है ऐसा कहा जाता है। लेकिन आजादी के बाद इस कृषिप्रधान देश की कृषि और किसान को बुरी तरह से विस्थापित करने के ही प्रयास हुए। परिणाम यह हुआ कि जो किसान किसी बीमारी का शिकार नहीं होता था उसे आत्महत्या की बीमारी ने ग्रास लिया। यह अचानक नहीं हुआ। आदमी आत्महत्या तभी करता है जब उसे जिंदगी से मौत अच्छी लगती है या जीने के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं। यहाँ तो किसानों की आत्महत्या को आत्महत्या कहना भी उचित नहीं। यह तो व्यवस्था द्वारा की हुई हत्या है। यहाँ किसानों को जीने के लिए मदद नहीं दी जाती लेकिन आत्महत्या के बाद उसके परिवारवालों को कुछ मदद दी जाती है। यही है किसान के प्रति व्यवस्था की संवेदना! यहाँ बाजार से कोई भी वस्तु लेते समय ऑखे मुँदकर प्रिंटेड कीमत देखकर खरीदी जाती है लेकिन किसानों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का भावतोल किया जाता है। यही है हमारी किसानों के प्रति संवेदना! दरअसल किसान और कृषि की ओर देखने का हमारा नजरिया ही सदोष है। इसी कारण आजाद देश में कोई युवक अब किसान नहीं बनना नहीं चाहता। आजादी की लंबी अवधि गुजरने के बाद भी हम किसानों की समस्याओं को दूर नहीं कर पाये यह यथार्थ है। इसके खतरनाक परिणाम अब सामने आ रहे हैं।

बीसवीं सदी का अंतिम दशक और इक्कीसवीं सदी का आरंभिक दौर भारतीय समाज में अत्यधिक परिवर्तनकारी साबित हुआ है। भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारीकरण और सूचना प्रोद्योगिकी ने जीवन के मायने ही बदल दिए हैं। देश में जहाँ आजादी से चली आई समस्याएँ तो दूर नहीं हुई लेकिन नई समस्याएँ मात्र उत्पन्न हुई है। प्रकृति का जो दोहन हो रहा है उसके भयावह परिणाम हो रहे हैं। व्यक्ति अत्यधिक आत्मकेंद्रित और अर्थकेंद्रित बनता जा रहा है। मानवी सभ्यता के इस दौर में चरित्र, नैतिकता, संस्कार धूमिल होते जा रहे हैं। आम आदमी का जीवन तो एक विचित्र स्थिति से गुजर रहा है। किसान जीवन की दशा तो अत्यधिक बदतर होती जा रही है। इधर हम महासत्ता बनने की बाते कर रहे हैं और उधर हमारी रोटी की पूर्तता करनेवाला ही संकट में फँसता जा रहा है। इस विकास के दौर में वहाँ विनाश के पदचिह्न बढ़ते जा रहे हैं।

'फॉस' उपन्यास के केंद्र में महाराष्ट्र का विदर्भ क्षेत्र है। महाराष्ट्र का यह इलाका सूखाग्रस्त है। इसमें भी विविधता है। उपन्यास के आरंभ में ही इसका जिक्र मिलता है। ''भला कोई कह सकता है कि सुखाड़ के ठनठनाते यवतमाल जिले के इस पूरबी छोर पर 'बनगाँव' जैसा कोई गाँव भी होगा जो आधा वन होगा, आधा गाँव, आधा गीला होगा, आधा सूखा।'' (पृ. ६) यहाँ की कृषि पूरी तरह बारिश पर निर्भर होने से अक्सर वह घाटे में ही होती है। वनगाँव मराठा, महार कुनबी, माँग, आदिवासी आदि की मिश्रित आबादी का

सूर्यासी' अर्थात चींटी आकाश में उड़ी और उसने सूर्य को निगल लिया। हर छोटे प्रयास ही आगे चलकर व्यापक बनते हैं।

यह उपन्यास एक ओर आंचलिक है तो दूसरी ओर व्यापक संदर्भ से भी जुडता है। इसमें परंपरागत रूग्ण मूल्य, अधंश्रद्धा का विरोध करते हुए वैज्ञानिक चेतना को अपनाने का संदेश है। इसमें मरने-मारने की बजाय रचनात्मक कार्य का अलख जगाया है। उपन्यास का कथ्य और शिल्प दोनों उल्लेखनीय हैं। उपन्यासकार ने परिवेश को कलात्मकता के साथ मूर्त किया है। इसमें किसान जीवन के तमाम संदर्भ रूपायित हुए हैं। इसमें कथा तो एक क्षेत्र की है लेकिन उसकी अभिव्यक्ति को व्यापक बनाया है। उपन्यास की भाषा शैली में क्षेत्रीय जीवन को ध्वनित करने की सामर्थ्य है।

संजीव ने इस उपन्यास को पूरा देशी बाना चढ़ाया है। महाराष्ट्र में मानवीयता का अलख जगानेवाले सुधारकों के कार्य को इसमें प्रस्तुत किया है। इसमें, दादाजी खोब्रागडे, देवाजी तोफा आदि स्वयं पात्र बनकर उपस्थित है। शिवाजी महाराज, बाबासाहब आंबेडकर, शाहू महाराज, संत गाडगे बाबा, अण्णा हजारे पोपट पवार, सिंधुताई सपकाळ आदि के कार्य का भी यथाप्रसंग उल्लेख आया है। संजीव के उपन्यास यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं। उनमें कोरी कल्पना को स्थान है। उपन्यास में उनकी दृष्टि समाजशास्त्रीय पाई जाती है। उपन्यास कला को उन्होंने एक नये ढंग से प्रस्तुत किया है। बशर्ते संजीव के उपन्यास को समझने में हिंदी समीक्षा चुक गई है। संजीव की कहानियों पर जितनी चर्चा हुई उतनी उनके उपन्यासों की नहीं हुई है। दरअसल उनके उपन्यास एक नई दृष्टि से समीक्षा की मॉग करते हैं। संजीव के समकालीन दौर में जो उपन्यास लेखन होता आया है उससे संजीव का उपन्यास लेखन अलग है। उनके उपन्यास न रंजन करते हैं न कलात्मकता बल्कि पाठकों को उस समस्या पर आत्मचिंतन करने को प्रवृत्त करते हैं।

RESEARCHJOURNEY